Dr. Jitendra Kumar Bairwa
(Asst. Prof. Political Science)

B.A. Part- III

(*Political Science*) PAPER –I^ST

प्रमुख पश्चिमी राजनीतिक विचारक

प्र01. प्लेटों की न्याय अवधारणा की विचेचना कीजिए।

उ0. न्याय सम्बन्धी अपनी धारणा को प्रतिपादित करने के पूर्व प्लेटों अपने समय में प्रचलित न्याय के त्रुटिपूर्ण सिद्धान्तों का खण्डन करता है प्लेटों के समय में न्याय के सम्बन्ध में तीन गलत धारणाओं का प्रचलन था, इन्हें क्रमश :

1. परम्परावादी सिद्धान्त
2. उग्रवादी सिद्धान्त
3. यथार्थवादी सिद्धान्त

प्लेटों के न्याय सिद्धान्त की विशेषताएँ :–

1. तीन गुणों का समावेश
2. नैतिक सिद्धान्त
3. न्याय जीवन का एक आन्तरिक तत्व और सन्तुलनकारी धारणा
4. कार्य विशिष्टता का सिद्धान्त
5. अहस्तक्षेप का सिद्धान्त
6. अति व्यक्तिवाद का विरोधी
7. सावयव व्यक्तिवाद का सिद्धान्त
8. मनोवैज्ञानिक आधार
9. दार्शनिक शासक

प्लेटों के न्याय सिद्धान्त की आलोचना :–

1. न्याय को कानूनी धारणा न मानकर नैतिक धारणा मानना।
2. व्यक्ति को राज्य का अधीनस्थ बना देना
3. अत्यधिक एकीकरण पर बल
4. अत्यधिक पृथवकीकरण

J.D.P.G. COLLEGE

5. प्रजातंत्र विरोधी

6. विरोधाभास

7. अधिकारों और दण्ड की व्यवस्था का अभाव

प्र02. अरस्तु के दासता सम्बन्धी विचारों की समीक्षा कीजिए।

उ0. **अरस्तु के अनुसार दासता का अर्थ एवं प्रकृति :–** दास प्रथा सम्बन्धी अपने विश्लेषण में अरस्तु ने सर्वप्रथम दास के अर्थ को स्पष्ट किया है उसने दास को पारिवारिक सम्पत्ति का एक भाग माना है। इसके अनुसार ''जो स्वभावत'' अपना नही है लेकिन दूसरों का है, दास है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि दास वह है। जिसका स्वयं का कोई व्यक्तित्व नहीं होता और यहां तक कि जिसका अपना मस्तिष्क नहीं होता।

दासता का औचित्य :–

1. दासता प्राकृतिक है।

2. दास प्रथा दोनों पक्षों के लिए उपयोगी

3. दासता नैतिक है।

4. राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था तथा स्थायित्व का अंग

5. दासता सम्पूर्ण समाज के हित में

6. विवेकीय दृष्टिकोण से दास प्रथा का औचित्य

7. यृद्ध का आधार

दासता के प्रकार :–

1. स्वाभाविक दासता

2. वैधानिक दासता

अरस्तु के दासता सिद्धान्त की आलोचना :–

1. दास प्रथा अप्राकृतिक

2. मानव समूह का विभाजन सम्भव नही

3. विभाजन का सर्वमान्य मापदण्ड नही

4. अनुदारवादी धारणा

5. विरोधाभास से परिपूर्ण धारणा

6. जातीय अंहकार का प्रतीक

7. अव्यावहारिक

J.D.P.G. COLLEGE

8. अवकाश का बहाना न्याय संगत नही

9. अलोकतांत्रिक सिद्धान्त

10. अतार्किक सिद्धान्त

11. अवैज्ञानिक सिद्धान्त

12. अमनोवैज्ञानिक

प्र03. अरस्तु के क्रान्ति सम्बन्धी विचारों की समीक्षा कीजिए।

उ0. अरस्तु की क्रान्ति सम्बन्धी धारणा तथा हमारी आज की क्रान्ति सम्बन्धी धारणा में महान अन्तर है किसी राज्य में जनता अथवा जनता के किसी भाग द्वारा सशस्त्र विद्रोह का नाम ही क्रान्ति नही है। अरस्तु के अनुसार क्रान्ति का अर्थ है संविधान में परिवर्तन।

संविधान में होने वाला छोटा–बडा परिवर्तन, संविधान में किसी प्रकार का संशोधन होना, जनतंत्र का उग्र या उदार रूप धारण करना, जनतंत्र द्वारा धनिकतंत्र का या धनिकतंत्र द्वारा जनतंत्र का विनाश किया जाना, सरकार में किसी प्रकार का परिवर्तन हुए बिना एक अत्याचारी शासक का दूसरे को हटाकर अपनी सत्ता स्थापित करना इन सब बातों को अरस्तु क्रान्ति मानता है।

क्रान्तियों के प्रकार :–

1. आंशिक अथवा पूर्ण क्रान्ति
2. रक्तपूर्ण अथवा रक्तहीन क्रान्ति
3. व्यक्तिगत अथवा गैर–व्यक्तिगत क्रान्ति
4. वर्ग विशेष के विरूद्ध क्रान्ति
5. वाग्वीरों की क्रान्ति

क्रान्तियों के कारण :– तीन कारण है जो निम्न है :–

1. सामान्य कारण
2. विशिष्ट कारण
3. विशिष्ट शासन प्रणालियों में क्रान्ति के विशिष्ट कारण

क्रान्तियों को रोकने के उपाय :–

1. संविधान के प्रति आस्था
2. शासक एवं शासितों में सद्भाव

J.D.P.G. COLLEGE

3. विधि का शासन

4. समानता का व्यवहार

5. मध्यम वर्ग की प्रधानता

6. आर्थिक समानता

7. समुचित शिक्षा पद्धति

8. विदेशी समस्याओं की तरफ जनता का ध्यान केन्द्रित करना

9. राजकीय पदों एवं सम्मानों का न्यायोचित वितरण

10. परिवर्तनों पर निगरानी

11. धनार्जन पर नियंत्रण

12. शासकों में परस्पर सद्भाव

प्र04. सामाजिक समझौते की प्रकृति के विषय में हॉब्स के विचारों को स्पष्ट कीजिये।

उ0. हॉब्स की राजनीतिक विचारधारा में सर्वप्रथम स्थान उसके सामाजिक समझौता सिद्धान्त का है इसके समझौते सम्बन्धी विचार उसके प्रसिद्ध ग्रंथ 'लेबियाथन' में विस्तार से अंकित है। इसके सामाजिक समझौता सिद्धान्त की व्याख्या निम्न प्रकार से की जा सकती है :-

1. मानव स्वभाव का स्वरूप

2. प्राकृतिक अवस्था

3. प्राकृतिक अधिकार और प्राकृतिक कानून

4. समझौते के कारण

5. सामाजिक समझौते द्वारा राज्य की उत्पत्ति

6. राज्य का स्वरूप

हॉब्स के सामाजिक समझौता सिद्धान्त की विशेषताएं :-

1. इसकी पहली विशेषता यह है कि समझौता सामाजिक है, शासकीय नहीं। शासकीय अनुबन्ध में शासक और शासितों में समझौता होता है। किन्तु हॉब्स का समझौता राजा और प्रजा के मध्य नही है किन्तु विभिन्न व्यक्तियों के बीच हुआ है। संविदा करने वाले पक्ष व्यक्ति है जो आपस में एक -दूसरे के साथ संविदा करके सम्प्रभु (शासक) की सुष्टि करते है। अतः संविदा की शर्त शासक पर लागू नहीं होती।

J.D.P.G. COLLEGE

2. शासक या सम्प्रभुता सत्ता समझौते में किसी भी पक्ष के रूप में सम्मिलित नही है। अतः वह जो कुछ करती है उसके लिए वह किसी के प्रति उत्तरदायी नही होता तथा वह पूर्णतः निरंकुश होती है।
3. इसकी तीसरी विशेषता यह है कि जिन उद्देश्यों से अनुबद्ध की रचना हुई, वे अनुबन्ध के अंग माग लिए गये है। इसका अर्थ यह है कि जब तक उनकी पूर्ति होती रहेगी तब तक अनुबन्ध जारी रहेगा।
4. इसकी चौथी विशेषता यह है कि यह मनुष्य के भय पर आधारित है। हिंसा जनित मृत्यु का भय ही मनुष्य को इस अनुबन्ध को करने के लिए बाध्य करता है।
5. पांचवी विशेषता यह है कि शासक सर्वोच्च विधायक होता है उसके आदेश ही नियम अथवा विधि होते है।
6. छठी विशेषता यह है कि हम समझौते से प्राकृतिक अवस्था में एकाकी रहने वाले व्यक्तियों ने समाज का निर्माण किया है। अतः यह सामाजिक समझौता है।

हॉब्स के सामाजिक समझौता सिद्धान्त की आलोचना :-

1. मानव स्वभाव का दोषपूर्ण चित्रण
2. प्राकृतिक अवस्था अस्वाभाविक
3. प्राकृतिक दशा में प्राकृतिक अधिकारों की मान्यता आसंगत है।
4. अतार्किक
5. निरंकुशता का समर्थन

प्र05. मेकियावेली को क्यों आधुनिक राजनीतिक विचारक कहते है? क्या वह एक आत्मसंगत तथा क्रमबद्ध राजनीतिक विचारक था?

उ0. अधिकांश विद्वान मेकियावेली को आधुनिक युग का जनक मानते है एक ओर उसे मध्ययुग का अन्तिम विचारक कहा जा सकता है तो दूसरी ओर आधुनिक युग में प्रथम।

डनिंग के अनुसार :- ‘‘यह कहना कि वह आधुनिक युग का प्रारम्भ करता है उसी प्रकार सही है जैसे यह कहना कि वह मध्ययुग को समाप्त करता है।’’

आधुनिक युग का जनक :-

J.D.P.G. COLLEGE

1. मध्ययुगीन विचारधारा पर प्रहार

अ. दैविक कानून

ब. पोप का प्रभुत्व

स. सामन्तवाद

2. प्रथम राजनीति वैज्ञानिक

3. ऐतिहासिक पद्धति

4. राज्य की आधुनिक स्थिति का निरूपण

5. राज्य की प्रभुसत्ता का पोषक

6. राष्ट्र राज्य की धारणा का सन्देशवाहक

7. राजनीति का धर्म और नैतिकता से पृथकत्व

8. शक्ति और सत्ता के राजनीति में प्रयोग का सूत्रधार

9. संघ राज्य का प्रथम उद्घोषक

मेकियावेली के विचारों की आलोचना :-

1. अध्ययन पद्धति त्रुटिपूर्ण

2. मानव स्वभाव सम्बन्धी एकाकी दृष्टिकोण

3. राजनीति में नैतिकता की उपेक्षा

4. राजनीति विज्ञान के मौलिक प्रश्नों की उपेक्षा

5. अवसरवादी राजनीति का प्रणेता

प्र06. बेन्थम के उपयोगितावाद के आधारभूत सिद्धान्तों की व्याख्या कीजिए।

उ0. **उपयोगितावाद का अर्थ** :- बेन्थम के अनुसार उपयोगिता के सिद्धान्त का अर्थ उस सिद्धान्त से है जो प्रत्येक कार्यवाही को चाहे वह जो भी क्यो न हो ऐसी धारणा के आधार पर स्वीकार या अस्वीकार करता है जिससे ऐसा लगता है कि वैचारिक पक्ष के हित में या तो अभिवृद्धि कर रहा है या ह्रास कर रहा है।

बेन्थम का उपयोगिता सिद्धान्त सुख की प्राप्ति और दुख के निवारण का सिद्धान्त है :- बेन्थम के उपयोगिता की आधारशिला सुख और दुःख की मात्रा के ऊपर है बेन्थम के मत में जो वस्तु सुख की अनुभूति देती है वह अच्छी है ठीक और उपयोगी है। जिस कार्य में मानव सुख में वृद्धि होती है। वही कार्य उपयोगी और उचित है और जिस कार्य से मानव को दुःख प्राप्त

J.D.P.G. COLLEGE

होता है। वह कार्य अनुपयोगी और अनुचित है। मानव के समस्त कार्यो की कसौटी उपयोगिता है।

दुःख–सुख का वर्गीकरण :– सुख–दुःख के स्वरूप को समझाने के लिए बेन्थम उन्हें दो भागो–सामान्य और जटिल में विभाजित करता है। इसमें सामान्य सुख के 14 और सामान्य दुःख के 12 भेद बताये है। जो इस प्रकार है :–

सामान्य सुख :–1. इन्द्रिय सुख, 2. भावना, 3. हिचाकिचाहट, 4. शत्रुता, 5. अपयश, 6. धार्मिकता, 7. दया, 8. निर्दयता, 9. स्मृति, 10. कल्पना, 11. आशा, 12. सम्पर्क।

बेन्थम के उपयोगिता सिद्धान्त के निष्कर्ष :–

1. सुख ही एकमात्र इच्छित वस्तु
2. सुख –दुःख का गणितीय मापन
3. सुख का आलिंगन और दुःख का बहिष्कार
4. सर्वाभौम सिद्धान्त
5. राज्य का उद्देश्य अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख
6. कानून का मूल्यांकन उपयोगिता

बेन्थम के उपयोगिता सिद्धान्त की आलोचना :–

1. सुखवादी मान्यता
2. अधिकतम संख्या का अधिकतम सुख असंगत
3. सुख भौतिक न होकर मानसिक होता है।
4. सुखों को मापा नही जा सकता
5. नैतिकता की उपेक्षा
6. व्यक्ति और समाज की उपयोगिता के बीच सामंजस्य का अभाव
7. बहुत के अत्याचार को प्रोत्साहन
8. साध्य से साधन का मूल्याकंन करने वाला सिद्धान्त
9. अमनोवैज्ञानिक सिद्धान्त
10. मानव प्रकृति का अत्यधिक सरलीकरण
11. मौलिकता का अभाव

J.D.P.G. COLLEGE

प्र07. कार्ल मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद व इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या की विवेचना कीजिए।

उ0. कार्ल मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद :– द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद प्रगतिवादी है, तथा इसकी प्रकृति भौतिक हैं, आत्मिक नहीं। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की मूल धारणा है कि विश्व का आधार भौतिक तत्व या पदार्थ है। वह अपने आन्तरिक स्वभाव द्वारा स्वतः विकासित होता है तथा समय –समय पर नाना प्रकार के रूप धारण करता है। यह विकास भौतिक पदार्थ में निहित आन्तरिक विरोध के कारण संचालित होता है और इसमें जैसा कि हीगल ने कहा है वाद, प्रतिवाद और संवाद की त्रयी को लेकर आगे चलता है तथा भौतिक विकास का पथ प्रशस्त करता जाता है मार्क्स ने हमें मानव इतिहास का अटल तथा अपरिवर्तनशील नियम कहा है।

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की विशेषताएँ :–

1. आंगिक एकता
2. गतिशीलता
3. परिवर्तशीलता
4. परिमाणात्मक, गुणात्मक परिवर्तन
5. क्रान्तिकारी प्रक्रिया
6. नकारात्मक – सकारात्मक संघर्ष

द्वन्द्वात्मक विकास के नियम :–

1. विपरीतों की एकता और संघर्ष का नियम
2. परिमाणात्मक से गुणात्मक परिवर्तन के रूपान्तरण का नियम
3. निषेध के निषेध का नियम

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की आलोचना :–

1. आत्मतत्व की घोर उपेक्षा
2. भौतिकवाद की धारणा अस्पष्ट एवं गूढ़
3. भौतिकवादी दर्शन
4. चेतन परा जड़ पदार्थो का संचालन
5. द्वन्द्वात्मक पद्धति का विकास एक कपोल कल्पना
6. प्रमाणों के बजाय दृष्टान्तों पर बल

J.D.P.G. COLLEGE

इतिहास की आर्थिक या भौतिकवादी व्याख्या :-

उत्पादन के साधनों के आधार पर बदलने वाले समाज के इतिहास को मार्क्स ने निम्नलिखित पांच युगों में बांटा है :-

1. आदिम साम्यवादी युग
2. दाम युग
3. सामन्ती युग
4. पूंजीवादी युग
5. साम्यवादी युग

इतिहास की आर्थिक व्याख्या की आलोचना :-

1. आर्थिक तत्व पर अत्यधिक और अनावश्यक बल
2. आर्थिक आधार पर सभी ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या सम्भव नहीं
3. इतिहास के निर्धारण में संयोग के तत्व की उपेक्षा
4. धर्म की उपेक्षा
5. राजनीतिक सत्ता का एकमात्र आधार आर्थिक सत्ता नहीं
6. इतिहास की अवैधानिक व्याख्या
7. मानवीय चेतना एवं सृजनात्मक कौशल की उपेक्षा
8. इतिहास की धारा का साम्यवादी युग में आकर रुक जाना।

प्लेटो

प्र01. प्लेटो के उत्तर काल की दो राजनीतिक रचनाओं के नाम बतलाइए।

उ0. स्टेट्समैन और लॉज

प्र02. प्लेटों ने अपने साम्यवाद का प्रतिपादन किस वर्ग के लिए किया है?

उ0. शासक वर्ग और सैनिक (अभिभाव वर्ग) के लिए।

प्र03. प्लेटों की शिक्षण संस्था का नाम क्या था?

उ0. अकादमी (Acadamy)

प्र04. प्लेटों अपनी पुस्तक ‘रिपब्लिक’ में शासन की शक्ति किसे सौपता है?

उ0. दर्शनिक राजा (Philosopherking)

प्र05. प्लेटों के अनुसार न्याय का आशय क्या है?

उ0. न्याय का आशय :- ‘‘प्रत्येक व्यक्ति उस कर्तव्य का पालन करें, जो उसके प्रकृति प्रदत्त गुणों और सामाजिक स्थिति के अनुकूल है।

J.D.P.G. COLLEGE

प्र06. प्लेटों के आदर्श राज्य की चार प्रमुख विशेषताएं बतलाइए।

उ0.ये चार विशेषताऐं :- 1. दार्शनिकों का शासन

2. शासक वर्ग की सत्ता असीमित नहीं

3. न्याय के सिद्धान्त का पालन

4. शिक्षा व्यवस्था पर शासकों का नियन्त्रण।

अरस्तू

प्र01. अरस्तू के आदर्श राज्य का सबसे प्रमुख लक्षण क्या है ?

उ0. राज्य में विधि की सर्वोच्चता।

प्र02. अरस्तू के अनुसार राज्य की चार प्रमुख विशेषताएं बतलाइए।

उ0. ये चार विशेषताएं :‘- 1. राज्य स्वाभाविक समुदाय है

2. राज्य व्यक्ति से पूर्व का संगठन है

3. राज्य सर्वोच्च समुदाय है

4. राज्य का स्वरूप जैविक है।

प्र03. अरस्तू के अनुसार अवकाश का आशय क्या है ?

उ0. अरस्तू के अनुसार अवकाश का आशय छुट्टियों से नही है, वरन् उन कार्यो को करने से है, जो अपने आप में साधन है साधन नहीं जैसे –ज्ञान, संगीत, चित्रकला और राजनीति।

एक्वीनास

प्र01. एक्वीनास के अनुसार कानून के कितने प्रकार है ?

उ0. 1. शाश्वत कानून 2. प्राकृतिक कानून 3. दैवी कानून 4. मानवीय कानून

प्र02. एक्वीनास के अनुसार न्याय क्या है ?

उ0. एक्वीनास के अनुसार न्याय, ‘‘प्रत्येक व्यक्ति को उसके अपने अधिकार देने की निश्चित और सनातन इच्छा है।’’

हॉब्स

प्र01. राजनीतिक चिन्तन को हॉब्स की देन के प्रसंग में चार प्रमुख बाते लिखिए।

उ0. 1. वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग 2. राज्य की उत्त्पति के सिद्धान्त का अभिनवीकरण, 3. निरपेक्ष और असमी प्रभुत्व शक्ति का प्रतिपादन, 4. राज्य को उच्च स्थिति प्रदान करना।

J.D.P.G. COLLEGE

लॉक

प्र02. समझौता सिद्धान्त के अतिरिक्त लॉक का नाम किस सिद्धान्त के साथ जुडा हुआ है।

उ0. प्राकृतिक अधिकार का सिद्धान्त :- लॉक के अनुसार प्राथमिक अवस्था में व्यक्तियों को जीवन, स्वतन्त्रता एवं सम्पत्ति के अधिकार प्राप्त थे।

प्र03. सामान्य इच्छा के सबसे प्रमुख लक्षण क्या है?

उ0. 1. सामान्य व्यक्तियों की इच्छा, 2. सामान्य हित पर आधारित इच्छा।

बेन्थम

प्र01. उपयोगितावाद को राज्य के द्वारा किस रूप में अपनाया जा सकता है?

उ0. अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम हित के सिद्धान्त के रूप में।

प्र02. बेन्थम के अनुसार सुख-दुख के स्त्रोत क्या है?

उ0. बेन्थम के अनुसार :- समान्यतया उपयोगिता के सिद्धान्त के अनुसार जनतंत्र ही श्रेष्ठ शासन पद्धति है क्योंकि जनतंत्र में ही बहुसंख्यक या अधिकतम लोगों के हित साधन हो सकता है।

मिल

प्र01. मिल ने अपनी पुस्तक On liberty में नागरिकों के लिए किस स्वतंत्रता का प्रतिपादन किया है?

उ0. 1. विचार स्वतंत्र 2. कार्य स्वतन्त्र

प्र02. मिल अल्पसंख्यकों को प्रतिनिधि देने के लिए किस पद्धति को अपनाने का सुझाव देता है।

उ0. इसने आनुपातिक प्रतिनिधित्व की पद्धति या हेयर प्रणाली को अपनाने का सुझाव दिया है।

कार्ल मार्क्स

प्र01. कार्ल मार्क्स की दो प्रमुख रचनाओं के नाम बतलाइए।

उ0. 1. साम्यवादी घोषणा पत्र, 2. पूंजी (Dascapital)

प्र02. द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का आशय क्या है

उ0. सृष्टि का विकास द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया (वाद, प्रतिवाद और सम्वाद) के आधार पर हुआ है और इस विकास का मूल तत्व भौतिकता या पदार्थ है।

प्र03. हीगल और कार्ल मार्क्स के द्वन्द्ववाद में अन्तर क्या है?

J.D.P.G. COLLEGE

उ0. द्वन्द्ववाद का सर्वप्रथम प्रतिपादन हीगल ने किया था। हीगल के द्वन्द्ववाद में विचार की प्रधानता है, कार्ल मार्क्स के द्वन्द्ववाद में भौतिकता या पदार्थ की प्रधानता है।

लॉस्की

प्र01. हैरेल्ड लॉस्की इंगलैण्ड की राजनीति में किस दल के साथ जुडे हुऐ थे?

उ0. हैरेल्ड लॉस्की अनेक वर्षों तक मजदूर दल की कार्यकारिणी समिति के सदस्य रहे।

प्र02. इंग्लैण्ड की उस शिक्षण संस्था का नाम बतलाइए, जहां लॉस्की ने व्याख्याता के रूप में सेवा दी।

उ0. लन्दन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स एण्ड पॉलिटिकल साइन्स

प्र03. सम्प्रभुता के प्रसंग में लॉस्की की धारणा क्या है?

उ0. लास्की सम्प्रभुता के प्रसंग में बहुलवादी सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है। इस प्रकार वे ऐसी व्यवस्था चाहते थे, जिसमें लोकतंत्र और समाजवाद का मेल हो।

J.D.P.G. COLLEGE